International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 42-45

डॉ0 ज्ञान सिंह मान के उपन्यासों में नारी चेतना : राष्ट्रीय संदर्भ

मीनू
शोधर्थी, पीएच.डी. (हिन्दी), सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत।

1. प्रस्तावना

राष्ट्र का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

राष्ट्र शब्द का अर्थ है, 'रासन्ते चारू शब्द कुर्वते जनःयस्मिन् प्रदेश विशेषतद् राष्ट्रम्' अर्थात् जिस प्रदेश के लोग विशिष्ट भाषा द्वारा विचार–विनिमय करते हैं वह स्थान विशेष राष्ट्र है।

मानक हिंदी कोशकार में राष्ट्र का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है, किसी निश्चित और एक शासन में रहने वाले लोगों का समूह।'[1]

> 'यजुर्वेद में राष्ट्र शब्द का उल्लेख कई स्थानों पर मिलता है। यथा 'राष्ट्र मेहेदि' तथा राष्ट्रदा राष्ट्रम्भे दत।'[2]
> ऐतेरेय ब्राह्मण' प्रजा को ही राष्ट्र की संज्ञा दी गई है।[3]

अनेक स्थानों पर पशु, धन–धान्य आदि सम्पदाओं से सुशोभित भूमि–भाग को राष्ट्र कहा जाता है। वस्तुतः अनेक अर्थों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि भाषा, भूमि, जनसमुदाय आदि विभिन्न अर्थों में राष्ट्र शब्द का प्रयोग किया जाता है। पाश्चात्य दृष्टि से 'राष्ट्र' अर्थात् 'छंजपवद' शब्द को लैटिन भाषा के 'छंजपव' शब्द से उद्भूत माना जाता है। इसका अधिकांश प्रयोग राजनीति के संदर्भ में किया है।

भारतीय विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से 'राष्ट्र' की परिभाषा दी है। जो इस प्रकार से है–

1. माखलाल चतुर्वेदी के अनुसार, 'हिमालय से लगातार समुद्र पर्यत के भू–भाग तथा हिमालय की एकता के प्रसार स्थान को राष्ट्र कहते हैं।[4]
2. डॉ. देवराज पथिक के अनुसार–फजब राष्ट्रीयता राजनीतिक एकता प्रथा स्वतंत्राता प्राप्त कर लेती है, तो वह राष्ट्र कहलाने लगती है।[5]
3. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने राष्ट्र की व्याख्या इस प्रकार की है–राष्ट्र केवल सीमाओं और जनसंख्या के समुच्चय का नाम नहीं है। उसके साथ परिस्थितियों के एक विशिष्ट आयाम और विशिष्ट इतिहास का योग होता है। राष्ट्र एक व्यक्ति के सदृश्य ही हैं।[6]

जब व्यक्ति मात्रा स्वयं को ही नहीं देखता बल्कि अपने कार्यों का मूल्यांकन राष्ट्रहित के संदर्भ में भी करता है तो उसकी भावनाएँ विस्तृत हो जाती हैं। यही 'देने के भाव' राष्ट्रीयता की भावना को जन्म देता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी राष्ट्रीयता की परिभाषा देते हुए कहते हैं, 'राष्ट्रीयता का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र का अंश है और उस राष्ट्र की सेवा के लिए, उसे धन–धान्य को समृ(करने के लिए, उसके प्रत्येक नागरिक को ुखी और सम्पन्न बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को सब प्रकार के त्याग और अष्ट स्वीकार करना चाहिए।[7]

2. राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका

राष्ट्र निर्माण में महिलाओं के योगदान की बहुत आवश्यकता है। उनकी उपेक्षा से समाज समुन्नत नहीं हो सकता, सम्मान नहीं पा सकता। स्वामी विवेकानंद जी ने भी उचित ही कहा था, 'औरतों की स्थिति में सुधार लाए बिना दुनिया का कल्याण संभव नहीं है। अटल बिहारी वाजपेयी जी का नारी के प्रति विचार है कि 'महिलाएँ केवल बेटियाँ, पत्नियाँ या माताएँ ही नहीं बल्कि वे इस लोकतंत्रा की जिम्मेदार नागरिक भी हैं। राष्ट्र की महानता में उनके योगदान को कभी सही तरीके से स्वीकार नहीं किया गया। महिलाओं के लिए एक संवैधानिक आयोग बनाने की जरूरत है जो इस उपेक्षित वर्ग की समस्याओं पर ध्यान दे और उन्हें बराबरी का दर्जा देने के सुझाव दें ताकि वे देश की प्रगति में योगदान दे सकें।[8]

डॉ. ज्ञान सिंह मान के साहित्य में वर्णन मिलता है कि नारी का राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान है। वह किसी–न–किसी रूप में राष्ट्र से जुड़ी रहती है। 'खुलते–बंद सीप' में जितेन की पत्नी गीता पति की देश सेवा में बाधक न होकर साधक सि(होती है। घर–गृहस्थी का बोझ स्वयं अपने कंधों पर उठाकर परिवार की उचित देखभाल करती है। समाज में अच्छी अध्यापिका की भूमिका अभिनीत करते हुए अच्छी माँ और पत्नी के रूप में दिखाई पड़ती है। गीता के त्याग और समर्पण के कारण ही जितेन फौज से रिटायर होने के बावजूद देश सेवा में संलग्न रहता है। गीता के प्रति जितेन का प्रेमभाव इन पंक्तियों में झलकता है। 'मैं जो कुछ पा रहा हूँ, तुम्हारे तप–त्याग और संयम का ही परिणाम है। इस जन्म में तुम्हारा प्रेम न पाया होता तो सम्भवतः आज मैं कुछ भी नहीं होता।'[9]

इसी तरह 'दीमक और दायरे' की मुक्ताबाई पति की अनुपस्थिति में गृह–गृहस्थी तथा राज्य का शासन संभालते हुए पति की देश–सेवा में सहायक बनती है। मुक्ताबाई के पति उससे कहता है 'सुनो रानी! समय बहुत जल्दी बदल रहा है। देश भर में महात्मा जी का अहसयोग आंदोलन बल पकड़ रहा है। दूर आसमान पर मुझे कुद अस्पष्ट और धुंधले मेघ नजर आ रहे हैं। कौन जाने कल हमारे पास यह अधिकार, यह सत्ता और यह हवेली रहेगी भी या . . .? जगमोहन ने सांस भर कर कहा।

'रानी मुझे इन वस्तुओं से मोह नहीं है। मैं महात्मा जी का सम्मानकरता हूँ, यदि उन्होंने आदेश दिया तो मैं भी यह सब कुछ सरकार को सौंपकर जेल चला जाऊँगा। मेरे पश्चात् कुंवर और तुम्हारा क्या होगा? यदि वह पढ़ लिख जाएगा तो उसके भविष्य की चिंता नहीं रहेगी, कहो अब तुम क्या चाहती हो?'

पति के शब्दों ने जैसे उसे सचेत कर दिया। संतान के मोह में उसने अपनी विचार शक्ति गिरवी तो नहीं रखी थी। पति के शब्दों ने उसे सोचने पर विवश कर दिया। बोली–आप चिंता न करें, मैं सब संभाल लूंगी।' जगमोहन मुक्ताबाई के उत्तर से संतुष्ट हुआ, मुस्कुरा उठा और . . .?[10]

'सूना अम्बर' में फौज में भर्ती सुदीप और सुनीत अर्चना को प्राप्त करने की लालसा में देश का अहित करने लगते हैं। सुदीप सुनीत के पुल पार करने की खबर जानकर बम फेंक कर पुल को उड़ा देता है, ताकि सदा–सर्वदा के लिए अर्चना उसकी हो जाए। यह सब सुनकर अर्चना बौखला जाती है। 'अर्चना ने अनुभव किया कोई धीरे–धीरे उसकी ओर बढ़ रहा है, हाथों को हिंस्र ढंग से खोले–क्या उसका गला दबा देगा वह, . . .नहीं, अर्चना भयभीत हो

उठी, प्रश्वासों की तीव्रता में कुछ न बन पड़ा तो वह तकिया उठाकर उजले अंधेरे की ओर पटक दिया। प्रलाप फूट पड़ा। चले जाओ सुदीप, चले जाओ। देश द्रोही, एक नारी के शरीर की कामना से पराजित होकर तुमने अपने माथे पर यह कलंक लिया। नहीं–तुम कलाकार नहीं वासना के कीड़े हो। इस अमृत से शरीर को आलिंगन में भरने की लालसा में उद्वेलित होकर, ओ दुष्ट आत्मा– ओ नीच कप्तान तुमने, तुमने अपने ही साथी सैनिकों को'
अर्चना का सारा शरीर थर्रा गया। जी में आया कि चीखकर कहे सुदीप से–लो पापात्मा लो, यही है वह वीभत्स–सुषमा जिसके लिए तुमने यह जघन्य पाप किया, पिशाच, नीचात्मा, कपटी–मैं तुम्हें कभी क्षमा नहीं कर सकती, कभी नहीं।[11] अर्चना का रोष देश के प्रति उसके प्रेम को अभिव्यक्त करता है। वह सुदीप और सुनीत की आपसी सुलह कराती है और देश निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है।

3. विश्वबंधुत्व एवं नारी

जब व्यक्ति 'स्व' से 'पर' की ओर उन्मुख हो जाता है, तब वह मात्रा अपने बारे में ही नहीं सोचता बल्कि परिवार, देशा और समाज के बंधन को छोड़कर सम्पूर्ण विश्व की भलाई की सोचता है और आज के समय में जहाँ मानव आष्विक शक्ति और भौतिकवाद के युग में जी रहा है, वहाँ तो इस विश्व बंधुत्व की भावना का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। क्योंकि इसी भावना, के बल पर हम एक–दूसरे का भला कर सकते हैं और अपनी ताकत को मानव कल्याण के लिए लगा सकते हैं, वरना द्वेष भावना के अंतर्गत मनुष्य कभी भी इस संसार को राख कर ढेर बना सकता है।
डॉ. ज्ञान सिंह मान जी साहित्य के माध्यम से विश्व को एक बंधन में बांधना चाहते हैं। 'बिंदु और भंवर' उपन्यास में अजरा और अमर के मध्य वार्तालाप उसकी विश्वबंधुत्व की भावना को दृष्टिगत करता है। 'अजरा के लिए मानो असमंजस की घड़ी थी। एक अपरिचित पुरुष के साथ इस प्रकार, अपरिचित और वह भी गोली द्वारा आहत–
अमर ने दबती आँखों से अजरा के अस्पष्ट चेहरे को अंतर्मन में उतारने का विपफल प्रयास किया।
परन्तु नहीं–, एक झटका, उसने थिरकती–तड़पती आवाज में कहा, 'समझ लीजिए, मैं आपका भाई ही हूँ–'
'मेरा भाई?'
'अजरा का सर्व शरीर थर्रा गया। नेत्राों के सम्मुख एक विचित्रा उद्भ्रांति कौंध गई। श्वास में भारीपान उमड़ आया, पीछे हट कर उसने का,
'परन्तु मैं तो मुसलमान हूँ और तुम एक–'
'हिन्दू हूँ . . . आह! यही न–'
'अमर ने ओंठ काट दिये, ऐसी पीड़ा तो संभवतः उसके प्राणों का समस्त बल निचोड़ लेगी– परन्तु कुछ तो कहना ही होगा,
'हम दोनों हिंदुस्तानी हैं, यही क्या कापफी नहीं है?'
भारतीय नारी के खून के बंधनों से ऊपर विश्वबंधुत्व का बंधन सर्वोपरि यही अजरा के माध्यम से दर्शाया गया है, जो एक क्रांतिकारी को अपना भाई स्वीकार करती है और उसे डॉक्टर के पास ले जाकर बचाने का भरसक प्रयत्न करती है।[12]
भारतीय नारी में पति के प्रति प्रेम और ममतामयी संवेदना को सहज ही देखा जा सकता है। लेकिन खुलते बंद सीप की गीता त्यागमयी एवं निष्ठावान नारी है, जिसके लिए पति का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। किसी और के बच्चे को सहज ही स्वीकार करना और उसे छाती से लगा लेना गीता जैसी नारियों की उदारता में शामिल है। 'जितेन नेत्राकोर छलकाना चाहते हैं।'
गीता, तुमने मुझ पर सदैव उपकार किया है, आज एक और वरदान तुम से मांगने आया हूँ, मानवता की इस भूल को सुधारने में तुम्हें मेरा साथ देना है, गीता–यह शिशु सुनीता के पावन प्रणय का प्रतीक है। तुम उनकी कहानी भली–भाँति जानती हो। इस मातृ–पितृ विहीन शिशु को अब हमें ही अपनाना है।
तुम कहोगी हमारे देश में तो असंख्य अनाथ बच्चे हैं, हम किस–किस को अपनाएंगे–नहीं गीता–ऐसा मत सोचना। सभी को अपने सामर्थ्य में रहकर सब कुछ करना धरना होता है। क्या हम इतने समर्थ भी नहीं हैं? हमारे पहले भी दो बच्चे हैं–एक विदेश चला जाएगा और दूसरी पराया धन है–उनके जाने के पश्चात् कौन तुम्हें माँ कहकर पुकारेगा? कौन तुमसे पूछेगा–माँ बावा कहाँ हैं? क्यों नहीं आते हमारे पास? गीता, नीता और उदय का अध्याय समाप्त हो रहा है, छोटे जितेन का अध्याय खुलने दो–यही तो है हमारे समाज की व्याख्या उदय और नीला की भांति इसे भी तुम्हारा रूप समझकर अपना लो–गीता।
गीता भाव विह्वल सी अपना माथा जितेन के कंधे पर पटक देती है। नेत्रा टप–टप बरसने लगते हैं, कहती है–
वह सजल नयनों से नन्हें शिशु को देखती है, श्वास भरकर उसे अपने हाथों में ले लेती है और गले से लगा लेती है।[13]
नारी के लिए प्रेम सर्वोपरि एहसास है, किसी से भी बांटना उसे अस्वीकार्य है। 'मैली पुतली उजले धागे' की किरण अपने प्रेमी के विवाहोपरांत भी उसकी तथा उसकी पत्नी की समस्त जरूरतों का ध्यान रखते हुए अपनी महानता का परिचय देती है। 'बस किरण! आज मेरा ध्येय पूरा हुआ। नारी के सात्विक रूप में मैं जिस अमर ज्योति के दर्शन पाना चाहता था, वह तुम्हारे शील सौंदर्य में आज अनायास ही साकार हो उठी है। तुम स्वयं को नहीं दे सकती, परन्तु यह सत्य है, किरण! वहाँ तुम्हारे आँसुओं में मानवता के लिए अमर संदेश छलकता है। तुमने स्वयं को समझ लिया है, किरण! भव–बंधनों से मुक्ति।[14]
नारी को पाने की चेष्टा में संलग्न सुदीप और सुनीत एक–दूसरे की जान के दुश्मन बन जाते हैं। अर्चना एक बुि(जीवी नारी का परिचय देते हए उन्हें उनके कर्त्तव्य का एहसास पिलाकर देश सेवा में संलग्न करना चाहती है।
'अर्चना की दमित व्यथा विक्षोम में परिवर्तित हो गई। नेत्राों में रक्तिम रोष छाने लगा, मुट्ठियाँ बंद हो गईं, जी में आया कि वह सुनीत को एक झटके में दूर खदेड़ दे। कोई ऐसा दुष्ट भी हो सकता है? देश से इतना बड़ा द्रोह? वैयक्तिक ईर्ष्या की शांति के लिए ऐसा विकराल परमाणु विस्पफोट . .. नहीं. . .नहीं।
अर्चना विश्व का प्रत्येक प्राणी थोड़ा बहुत बुरा जरूर है, मैं कुछ अधिक बुरा भी हो सकता हूँ। स्वार्थी भी हूँ, इसीलिए तो तुम्हारा सामीप्य हर कीमत पर चाहता था। परन्तु अर्चना–स्वार्थी क्या केवल मैं ही हूँ? शेष संसार क्या इस दुर्भाव से पूर्णतः मुक्त है? इतना ही है मेरा अपराध, अर्चना तुम्हारी ओर से कोई भी दण्ड मुझे सहर्ष्ा स्वीकार है। मुझे दण्ड दो, मैं तुम्हारा दोषी हूँ। मुझे मेरे पाप से मुक्ति दिला दो। अर्चना. . .।'
कैसी विकट स्थिति थी। निर्णायक पद पर वही सुशोभित है जो स्वयं दोषी था। परीक्षा की वे घड़ियाँ, सचमुच ही अत्यंत दुखपूर्ण थी।
किसी भी अपराध के लिए तुम्हें दण्ड देना मेरी सीमा और शक्ति से परे है। दण्ड का दूसरा अर्थ मुक्ति में है और मुक्ति मुक्ति का ही दूसरा नाम है।
क्षण भर के लिए सुनीत चित्रा लिखित कल्पना की भांति स्थिर रह गया, परन्तु वे क्षण बहुमूल्य थे उन्हें व्यर्थ से दर्प में तो नहीं मिलाया था। उसने सुदीप द्वारा चुम्बित हाथ से भिन्न हाथ अपने अपने ओंठ सटा दिए। अर्चना ने सुनीत का वह दृढ़ हाथ अपने कोमल बंधन में ले लिया, पुनः सुदीप की ओर देखकर भावमयी अनुरोध में कहा,
'सुदीप मेरे पास आओ–'

मंत्रा वशीभूत सा सुदीप अर्चना के समीप चला आया। अर्चना ने उसका वही हाथ पुनः अपने हाथ में भरकर सुनीत के हाथ पर रख दिया। अर्चना ने उन दो दृढ़ स्पर्शों को अपनी कोमल पकड़ में भर लिया, उसका अपना हाथ, सुनीत और सुदीप के हाथ तथा पिफर उसका अपना हाथ! विरोधी स्वभावों का वह कैसा अनूठा संगम था। अर्चना ने एक ही तड़पती दृष्टि में दोनों अधिकारियों को बांध दिया, पफीकी श्वास भरकर कहा,

'लो, आज हम सदैव के लिए एक हो गए हैं।'

'तुम दोनों इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि हम तीनों का एक समभाव भी रहा है–वही जिसे तुम प्रतिशोध कहोगे और मैं आत्म–प्रवंचन। भाव चाहे कुछ भी क्यों न हो प्रश्न समता का है। प्रयत्न करो कि तुम दोनों अपना–अपना प्रतिशोध इस पुनीत मिलन के मंगल अवसर पर मुझे दान में दे दो–'[15]

इस प्रकार डॉ. ज्ञान सिंह मान के साहित्य में विश्वबंधुत्व के स्पष्ट उदाहरण मिलते हैं। सम्पूर्ण विश्व के प्रति आत्मीयता का भाव रखने वाली नारी सम्पूर्ण विश्व को एक अटूट बंधन में बांधना चाहती है और इसके लिए प्रयास भी करती है।

4. देशभक्ति और नारी

जब मानव में अपना सर्वस्व बिना किसी स्वार्थ भावना के अपने देश के लिए बलिदान करने का जज़्बा पैदा हो जाता है तो वह देशभक्ति कहलाती है। देशभक्ति में मानव अपने–पराये का भेदभाव भूल जाता है तथा उस देश के सभी नागरिक उसके अपने सगे संबंधी हो जाते हैं। अपने देश के प्रति ऐसा प्रेम ही हमारे अंदर राष्ट्रीय मूल्यों को पैदा करता है। हमारे अंदर राष्ट्रीय मूल्यों को पैदा करता है। हमारे राष्ट्रीय मूल्यों को महात्मा गांधी के विचारों से जाना जा सकता है।

डॉ. ज्ञान सिंह मान ने 'सूना अंबर' उपन्यास में कमाण्डर और संदीप के माध्यम से दर्शाया है कि किस प्रकार हमें अपने देश की स्वतंत्राता और अखण्डता के लिए बलिदान देने के लिए तैयार रहना चाहिए।

'हाँ जवान मुझे वहीं लौटना है। कुछ साथी पीछे रह गए हैं उन्हें लौटाना है–'

बपर्फीले प्रदेश में उष्म भावुकता, अंधकार के घने प्रस्तार में वे चमकते अश्रु कण–कमाण्डर ने भराई आवाज में कह ही दिया।

'सुनो, यदि मैं लौटकर न आया तो मातृभूमि तक यह नमस्कार पहुंचा देना–कहना कमाण्डर ने अपना वादा पूरा कर दिया–'और दो मोटे अश्रु कमाण्डर के उज्ज्वल नेत्राों से टपक धूमिल सी मूंछों में समा गये। आंसू स्पष्ट दीख पड़े, तभी क्या आंतरिक भाव विह्वलता का परिज्ञान प्राप्त होता है–नहीं, आंतरिक भावमय उछलन को तो थिरकते श्वास भी व्यक्त कर देते हैं। सुदीप के अपने नेत्रा भी सजल हो उठे, अपनी–अपनी व्यथा और अपना कर्त्तव्य। उसने तुरंत खड़े होकर कमाण्डर को शिष्ट 'सैल्यूट' दिया और तरल किंतु विश्वास स्वर में कहा,

'साहब, हमारा देश सचमुच महान है। देश सेवा की कितनी उदात्त कामना है यह–सर मैं, आपको नमस्कार करता हूँ। इन भयपूर्ण क्षणों की दिव्यता में मैंने भारत की अंतरात्मा के दर्शन दिए हैं। विश्वास रखिए, सर हम अपनी पराजित नहीं होंगे। विजयी होने का संकल्प ही हमारी भारतीयता है–'

और कमाण्डर के तरल होंठों से एक आदर्श वाक्य उत्सरित हो पर्वतों के खण्ड–खण्ड में समा गया। अपनी सीमा से आगे की ओर सरकते हुए कमाण्डर ने उत्साह पूर्ण वाणी में कहा,

'समय नष्ट नहीं करना। पुल नष्ट हो गया तो हमारी भी हानि–'

'सर, आप चिंता न करें। सब ठीक होगा–'

'एक शब्द : दो स्थलः तीन राही–'कमाण्डर ने जैसे 'कोड' में कुछ कहा, सुदीप ने तनिक झुककर प्रत्युत्तर में कह दिया।

'एक शब्द : दो स्थल : तीन राही–'

कमाण्डर और नीचे की ओर जाना है, सम्भवतः वही जानता था। सरकते धीमे अर्थहीन प्रवाह में एक शब्द गगन भेदी थिरकन में गूंज उठा।

'जय हिंद–'[16]

अपने देश और उसकी हर वस्तु का सामना करना देश–भक्त अपना कर्त्तव्य समझता है और उसकी रक्षा करना अपना अधिकार। हमारे देश में तिरंगे को त्रिदेवों के समान समझा जाता है और उसका अपमान करना पाप। हमें अपनी मातृभाषा का भी सम्मान करना चाहिए।

डॉ. ज्ञान सिंह मान ने 'सूना अम्बर' में यही दर्शाने का प्रयत्न किया है। हमारे देश के सैनिक हमारे देश की अमूल्य धरोहर है, हमें उनका भी सम्मान करना चाहिए।

पुनः एक आह्वान वह पड़ाव तो क्षणिक था। 'बिगुल' के प्रथम ही ध्वनि प्रसार नके सब सैनिकों को पुनः लारियों में लौट जाने के लिए विवश कर दिया, सुदीप ने भी हाथ बढ़ाया, तनिक बाहर की ओर झुके एक सैनिक ने उसे सहारा दिया–वह भी लारी में आरूढ़ हो गया। सभी के बैठने का स्थान वहाँ नहीं था। कुछ तो पहले ही खड़े थे और कुछ–एक सुदीप ने बाजू की कमीज से अपना मुख सापफ किया। नेत्राों में एक गंभीर रोष बल पकड़ रहा था। जिस स्थान पर वह बैठा आ रहा था, उस पर भागते लोह यंत्रा के धक्कों में अपना संतुलन रखना भी एक कला है। विशेषतया उन क्षणों में जब आंतरिक उद्वेलन बाह्य धमाचौकड़ी से अधिक गहन और गंभीर हो। सुदीप उस स्थान पर जहाँ वह स्वयं आसीन था किसी दूसरे युवक को देखकर अस्थिर हो उठा। सामने बैठे उन्नत से मस्तक और बड़े–बड़े नेत्राों वाले युवक ने भी उसे एक ही सांस में ऊपर से नीचे तक देख लिया। होंठों पर एक रहस्यमय व्यंग्य मुस्कान अनायास ही अपना प्रभाव छोड़ गई। मानो वह कह रहा हो।

'यहाँ तो सबका समान अधिकार है–'

सुदीप को वह अनाधिकार हस्ताक्षेप अच्छा नहीं लगा। सामने बैठे युवक के चेहरे पर प्रतिपल रंग बदलते भावों ने उसे आगे बढ़कर कहने के लिए विवश कर दिया। सुदीप ने एक हाथ 'सपोर्टर' पर रखते हुए तनिक झुककर कहा।

'मिस्थ्र, यह स्थान मेरा–'

संबोधित युवक ने एक सरल दृष्टि से अपने साथियों की ओर देखा। यु(भूमि के लिए प्रस्थान था, प्रौढ़ सैनिकों के चेहरों पर कुछ–कुछ गांभीर्य अवश्य था, किंतु युवक सैनिकों में एक अकथनीय उत्साह और विचित्रा उन्माद स्पष्ट था। सम्भवतः वह यु(उनके शुभारंभ का स्वागती गीत हो।

युवक ने सब कुछ अनुभव करते हुए कह ही दिया।

'तुम्हारा नाम तो यहाँ कहीं लिखा नहीं है। और पुनः वह हंसता हुआ बोला, 'यह गाड़ी भी सरकारी है और हम भी सरकारी, पिफर यह 'मेरी'

'तुम्हारी का प्रश्न–'

सुदीप को लगा किसी भीमकाय पत्थर ने उसके दोनों हाथ एक ही झटके में शरीर से पृथक कर दिये। कोई बर्बर बंदी जैसे अंध कूप की दीवारों से मस्तक पटक चीख उठा। आर्तक्रन्दन या आतंकपूर्ण दहाड़। सुदीप ने तनिक दांत पीस कर कहा।

'यह दादागिरी कहीं और चल सकती है, यहां नहीं–' युवक ने पुनः विश्वस्त स्वर में कहा, इस बार शब्दों की कृत्रिमता और भी बढ़ आयी थी।

'देख नहीं रहे, दादागिरी तो चल रही है–' और वह उन्मत सी हंसी में पफूट पड़ा। समीप खड़े दूसरे सैनिकों के लिए संभवतः वह घड़ी अत्यंत ही विनोदपूर्ण थी थकानपूर्ण यात्राा को काटने का कितना सहज मनोरंजन था उस वार्ता में।[17]

इस प्रकार देशभक्ति की भावना स्वयं से बड़ी और महान है जो कि राष्ट्र के निर्माण में सहायक है तथा राष्ट्रीय मूल्यों का आधार है। देश के प्रति निष्ठा, विश्वास, उसके विकास का संकल्प, उसकी एकता एवं अखण्डता की रक्षा और उसकी समृ(का लक्ष्य देशभक्ति की भावना रखकर उसको धर्म समझकर निभाकर ही प्राप्त किया जा सकता है।

कभी–कभी सिपाही के समक्ष ऐसी विकट परिस्थिति आ जाती है, जहाँ उसकी निर्णायक शक्ति एवं साहस ही उसका सहायक होता है। 'खुलते बंद सीप' में जितेन बाबू ने ऐसी ही स्थिति को जूझते हुए दिखाई पड़ते हैं। 'मैंने अनुमान लगाया डाकू मंगलसिंह कहीं पास ही जंगल अथवा कंदरा में होना चाहिए। डेढ़ या दो घंटे इस पहाड़ी प्रदेश को पार कर जाना सुगम नहीं है। मैंने बस्ती वालों से पूछताछ की पता चला कि वह पश्चिम की ओर बहने वाली बरसाती नदी को पार कर गया है। उस मार्ग पर जीप नहीं चल सकती थी, घोड़े का रास्ता भली प्रकार तय किया जा सकता था। मैंने अपने दो सहायक लिये और नदी पार पफैले विस्तृत और घने वन में चला गया। अभी पूर्व की ओर मुड़ने वाला साथी मुड़ा ही था कि सनसनाती गोली उसका सीना भेद दूर निकल गई।

उसका मृत शरीर खून से लथपथ एक ओर लुढ़क गया। गोलियाँ तीन ओर से चल रही थीं। मैंने अपने साथी को धकेल कर पत्थर के पीछे गिरा दिया और स्वयं एक वृक्ष की ओट लेकर 'रिवाल्वर' खाली करने लगा। मैं अभी उठने ही लगा था कि वायु को भेदती एक गोली मेरे बाजू को छीलती हुई मेरे साथी के माथे को भेदती हुई मेरे साथी के माथे पर जा धंसी।

मंगल सिंह के भागते ही मुझे अपनी बाजू पर लगे घाव का ध्यान आया, रक्त कापफी बह चुका था, मैंने लौटने की सोची, रक्त कापफी बह चुका था, मैंने लौटने की सोची–सहसा मंगल सिंह का साथी 'पफायर' करता हुआ प्रकट होने का प्रयास करता है। ज्यों ही उस डाकू ने घोड़े की ओर बढ़ने का प्रयास किया मैंने हाथ पर निशाना बांधा और कगोली दाग दी, भागता हुआ डाकू वहीं पर ढेर हो गया। मेरे लिए विकट स्थिति थी। लौटूं या बढ़ूं? निश्चित नहीं कर पाया। मंगल सिंह का पीछा ही करना होगा, वह भी अकेला और मैं भी बिना साथी के . . . क्या वह शारीरिक रूप से मुझसे बलिष्ठ होगा? मैंने जेब से रुमाल निकाला अपने बाजूज पर जहां रक्त बह रहा था, बांध लिया। सहसा एक गरज के साथ–पीछे लौटना कायरता है, कर्त्तव्य के प्रति द्रोह है? मैंने बाग संभाली और मंगल सिंह की दिशा को घोड़ा बढ़ा दिया। दो–दो हाथ करने के लिए मेरी भुजाएं पफड़क उठीं, इधर बाजू का दर्द बढ़ता जा रहा था और उधर मेरा लक्ष्य मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मेरा घोड़ा बढ़ता जा रहा था, सामने उन्मुक्त जल का भयंकर बहाव था। मैंने अपना घोड़ा रस्सों और लकड़ी के बने पुल पर बढ़ा दिया। अभी कुछ गज ही गया था कि गगन जैसे घूम गया। जीवन और मृत्यु में एक क्षण की दूरी–ओह! मंगल सिंह जाती बार सभी रस्से काट गया था।

एक विचित्रा तड़–तड़ सा स्वर सुना ही था कि मेरा घोड़ा नीचे पत्थरों पर गिरकर दम तोड़ चुका था। मस्तक पर लाल लुटिकाएँ सी जलने लगीं, बु(पर जैसे आतंकमय मायाजाल था। गिरा, मैं कैसे घोड़े की पीठ से लटक कर लोहे के तार को पकड़ने में समर्थ हो पाया–नहीं जानता। तार का केवल एक सिरा, वह भी चोटियों के मध्य, जलधारा के ठीक ऊपर, वही बाजू, झटका खाते ही एक पफुहार पूफट पड़ी। दोनों टांगें और एक हाथ निराधार।[18]

'दीमक और दायरे' मुक्ताबाई अपने पति के स्वतंत्राता आंदोलन में सहायक बनती है।

'हरपाल अभी पाँच वर्ष का हुआ होगा कि जगामोहन को महात्मा जी के आदेश का पालन करने के लिए जेल जाना पड़ा। जगमोहन बड़े जमींदार थे, सरकार की ओर से उन्हें एक छोटी जागीर मिली हुई थी। परन्तु ये सारे प्रलोभन स्वराज्य के आगे महत्वहीन थे। विदा के समय जगमोहन ने कहा, 'रानी मैं जा रहा हूँ, जब तक महात्मा जी का आदेश रहेगा, जेल में रहूंगा। मेरे पीछे मेरी प्रजा का ख्याल रखना।'

मुक्ताबाई का मन बैठने लगा, पति देश कल्याण के लिए जा रहे थे, वह उन्हें रोक कर कल्याण पथ की बाधा नहीं बनना चाहती थी।[19]

इस प्रकार डॉ. ज्ञान सिंह मान के साहित्य में देश भक्ति की भावना उजागर होती है। नारी देशभक्त है। वह अपने देश में, अपने वतन में रहकर ही अत्यंत खुश है।

5. निष्कर्ष

उपन्यासकार के साहित्य में राजनीतिक चेतना में नारी का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। अपितु नारी राजनीति के अपराधीकरण से पीड़ित होती है। परन्तु पिफर भी विश्वबंधुत्व और देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत है। राजनीति में भ्रष्ट लोग नारी का शोषण करते हैं, उसको प्रताड़ित करते हैं। प्रशासनिक चेतना में भी नारी को विशिष्ट अधिकार प्राप्त नहीं है।

डॉ. ज्ञानसिंह मान ने अपने साहित्य में वर्तमान शासक वर्गीय राजनीति के चरित्रा को उघाड़ते हुए जन सामान्य की राजनीति को भी अपने साहित्य में स्थान दिया है। प्रशासन व्यवस्था का चरित्रा, चरित्रा के माध्यम से राज्य का वर्गीय चरित्रा है। मानव मूल्यों की रक्षा करता हुआ कोई व्यक्ति प्रशासन व्यवस्था में नहीं रह सकता। लोकतंत्रा में चुनाव–व्यवस्था इतनी महंगी है कि आम आदमी इस प्रक्रिया में हिस्सा नहीं ले सकता। चुनावी हथकंडों ने मानवीय संवेदनाओं को नगण्य बना दिया है।

6. संदर्भ सूची

1. रामचंद्र वर्मा, मानक हिंदी कोश, पृ. 503
2. यजुर्वेद, दशम अध्याय, पृ. 213
3. एतेरय ब्राह्मण, अध्याय–40, खण्ड–3/26
4. माखनलाल चतुर्वेदी, साहित्य देवता, पृ. 10
5. डॉ. देवराज पथिक : हिंदी की राष्ट्रीय काव्य धरा, पृ. 20
6. आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी : राष्ट्रीय साहित्य और अन्य निबंध, पृ. 17
7. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास, पृ. 247
8. अटल बिहारी वाजपेयी ;सं. डॉ. चंद्रिका प्रसाद शर्माद्ध, बिंदु बिंदु विचार, पृ. 16
9. डॉ. ज्ञान सिंह मान, खुलते बंद सीप, पृ. 134
10. डॉ. ज्ञान सिंह मान, दीमक और दायरे, पृ. 105
11. डॉ. ज्ञान सिंह मान, सूना अम्बर, पृ. 205
12. डॉ. ज्ञान सिंह मान, बिंदु और भंवर, पृ. 88
13. डॉ. ज्ञान सिंह मान, खुलते बंद सीप, पृ. 210
14. वही, मैली पुतली उजले धगे, पृ. 188
15. डॉ. ज्ञान सिंह मान, सूना अम्बर, पृ. 249
16. डॉ. ज्ञान सिंह मान, सूना अम्बर, पृ. 168
17. डॉ. ज्ञान सिंह मान, सूना अम्बर, पृ. 157
18. डॉ. ज्ञान सिंह मान, खुलते बंद सीप, पृ. 47
19. वही, दीमक और दायरे, पृ. 121